18-19

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

Rani Laxmibai Mahavidyalaya IQAC PAROLA Dist.Jalgaon

CONTENTS OF HINDI PART - II

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती स्थितीयाँ **प्रा. पल्लवी जयपाल बोरकर**	७०-७२
१४	महाराष्ट्र के हिंदीतर भाषियों का हिंदी प्रचार प्रसार में योगदान संत नामदेव **प्रा. कृष्णा ना. घायकवाड**	७३-७५
१५	घुमन्तू समाज का जाति के अनुसार व्यवसाय का वर्गीकरण **डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर**	७६-७७
१६	तुलनात्मक साहित्य **डॉ. राजेंद्रसिंह चौहाण**	७८-८१
१७	सोलह महाजनपदों में कोसल का महत्व **कुलभूषण श्रीवास्तव**	८२-८६
१८	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के उपन्यास में सामाजिकता (सूने चौखटे के विशेष संदर्भ में) **प्रा. डॉ. सौ. सुरैय्या इसुफअल्ली शेख**	८७-९०
१९	संत कबीर के काव्य में प्रकृति - चित्रण **डॉ. रवींद्रकुमार शिरसाट**	९१-९५
२०	प्रवासी भारतीय साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा की कहानियोंका कथ्य **प्रा. डॉ. विजय श्रावण घुगे**	९६-१००

SELF ATTESTED

Scanned with OKEN Scanner

IQAC PAROLA Dist. Jalgaon

२०. प्रवासी भारतीय साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा की कहानियोंका कथ्य

प्रा. डॉ. विजय श्रावण घुगे
गणी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, ता. पारोळा, जि. जळगाव.

भारत के बाहर रहकर हिंदी में लेखन करनेवाले साहित्यकारों को प्रवासी भारतीय साहित्यकार कहा जाने लगा है। साहित्यकार प्रवासी होता है, साहित्य नहीं। फिर भी `प्रवासी साहित्य` शब्द रूढ़ हो गया है। विदेश में रहनेवाले साहित्यकार अपने देश के प्रति समर्पित हैं। इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि विदेशी भाषा का आश्रय न लेकर वे अपनी भाषा में साहित्य सृजन कर रहे है। देश के प्रति व्याकुलता, बेचैनी, अस्तित्व की तलाश तथा आत्मबोध इनके साहित्य में दिखाई देता है। `प्रवासी भारतीय` शब्द नया नहीं है। विदेश में बसे हिन्दी लेखकों की रचनाओं और पत्रिकाओं के प्रकाशन के कारण `प्रवासी साहित्य` प्रचलित हो गया। देश के पाठकों की इसके प्रति जिज्ञासा बढ़ गई। अब प्रवासी साहित्य हिंदी की वास्तविकता बन गया है। मुख्यधारा से जुड़ गया है।

प्रवासी भारतीय साहित्यकारों में तेजेंद्र शर्मा एक चर्चित नाम है। लेखक, कवि, संपादक, तथा उत्कृष्ट अभिनेता के रूप में आप मशहुर है। लंदन के ओवल ग्राउंड रेलवे में आप कार्यरत है। आप के `काला सागर`, `ढ़िबरी टाईट`, `देह की कीमत`, `यह क्या हो गया`, `बेघर आँखे` नाम से पाँच कहानी संग्रह तथा `ये तुम्हारा घर है` शीर्षक से एक कविता संग्रह प्रकाशित हो चूके है। अंग्रेजी में तेजेंद्र शर्मा ने तीन पुस्तकें लिखी है। इंग्लैंड से प्रकाशित होने वाली `पुरवाई` पत्रिका का आप ने दो वर्ष तक संपादन किया है। पंजाबी नेपाली, उर्दू भाषाओं में आपकी कहानियों के अनुवाद हो चुके है। कई पुरस्कारों से आप को सम्मानित किया गया है।

समकालीन कथा साहित्य में तेजेंद्र शर्मा ऐसे कहानीकार है जिनके कहानी साहित्य में पात्र स्वदेश-परदेश के द्वन्द्व में जिते है, मरते है। आपकी कहानियाँ एक नया परिवेश, नई जीवन दृष्टि तथा यथार्थ से परिचित करवाती है। वर्तमान और ज्वलंत समस्याओं का चित्रण आपकी कहानियों में हुआ है। भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति, परिजनोंकी स्वार्थ वृत्ति, विदेश की नागरिकता, दोहरी नागरिकता, पुनर्विवाह, अनमेल विवाह, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, आंतकवाद, भारत पाकिस्तान संबंध, कर्गिल युद्ध, कश्मिर समस्या, अयोध्या बाबरी मस्जिद विवाद, मुस्लिम राष्ट्रों के अजब कानून, भारतीयों के साथ क्रूरता पूर्ण व्यवहार, विदेश का मोह और मोहभंग, मातृत्व की अतृप्ति, डिप्रेशन, काउंसलिंग जैसे विषयों का यथार्थ रूप में चित्रण आप की कहानियों में हुआ है। तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में अलग-अलग देशों की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। वहाँ के इतिहास और भूगोल का भी लेखकने अवलोकन किया है। साथ ही सत्ता और राजनीति तथा कानून प्रक्रिया में होनेवाले विलंब की सच्चाई को लेखक ने चित्रित किया है।

`सपने मरते नहीं` कहानी में मातृत्व को लेकर अनगिनत सपनें सजाने के बाद जब इला स्टिल बॉर्न यानि मृत पुत्र को जन्म देती है तब वह मानसिक रूप से टूट जाती है और डिप्रेशन का शिकार बन जाती है। अजन्मे शिशु का नामकरण, उसकी चीज़े, जन्म के बाद उसका खुबसुरत मृत शरीर सारी बातें इला को मानसिक रूप से तोड़ देती है। परिणाम यह होता है कि उसके

SELF ATTESTED